यूपी में भारी बारिश का अलर्ट, पहाड़ों में फ्लैश फ्लड का खतरा

दि ग्राम टुडे,कानपुर / लखनऊ। मानसून की सक्रियता के बीच अगले 24 घंटों में उत्तर प्रदेश समेत देश के कई राज्यों में बारिश का दौर तेज रहने की संभावना है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार 20 से 21 अगस्त 2026 के दौरान उत्तर प्रदेश के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों में गरज–चमक के साथ भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। इसके साथ ही प्रदेश के कुछ इलाकों में अचानक बाढ़ यानी फ्लैश फ्लड का जोखिम भी बना हुआ है।

मौसम की संभावित परिस्थितियों को देखते हुए प्रशासन और आपदा प्रबंधन से जुड़े विभागों को संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरतने की जरूरत है। लगातार बारिश की स्थिति में निचले इलाकों में जलभराव, कच्चे मकानों को नुकसान, जलनिकासी व्यवस्था प्रभावित होने तथा छोटे नदी–नालों के जलस्तर में अचानक वृद्धि जैसी स्थिति सामने आ सकती है।

उत्तर प्रदेश में गरज–चमक के साथ भारी बारिश

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों में अगले 24 घंटों के दौरान गरज–चमक के साथ भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना जताई गई है। बारिश के साथ तेज हवाएं और आकाशीय बिजली की गतिविधियां भी परेशानी बढ़ा सकती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के साथ शहरी इलाकों में भी निचले स्थानों पर पानी भरने की स्थिति बन सकती है।

प्रशासन की ओर से लोगों को मौसम खराब होने के दौरान अनावश्यक रूप से खुले स्थानों पर जाने से बचने और बिजली चमकने के समय पेड़, विद्युत खंभे तथा खुले मैदान से दूरी बनाए रखने की सलाह दी जा सकती है।

पहाड़ों में भूस्खलन और अचानक बाढ़ का खतरा

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण संवेदनशील स्थानों पर भूस्खलन और फ्लैश फ्लड का खतरा बना रहेगा। लगातार बारिश से पहाड़ी नदियों और बरसाती नालों का जलस्तर अचानक बढ़ सकता है। ऐसे में पर्वतीय मार्गों पर यात्रा करने वाले लोगों को विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है।

दिल्ली–छब्, पंजाब और हरियाणा में भी बारिश

दिल्ली–छब् के साथ पंजाब और हरियाणा में भी बादल छाए रहने तथा कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश या बौछारें पड़ने की संभावना है। बारिश के कारण तापमान में गिरावट और मौसम सुहावना होने के साथ–साथ यातायात व्यवस्था प्रभावित होने की स्थिति भी बन सकती है।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में मानसून सक्रिय

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी मानसून के सक्रिय रहने तथा कई इलाकों में मध्यम से भारी बारिश होने का अनुमान है। लगातार बारिश वाले क्षेत्रों में स्थानीय जलभराव और नदी–नालों के जलस्तर पर निगरानी आवश्यक होगी।

प्रशासन को सतर्क रहने की जरूरत

मौसम के पूर्वानुमान को देखते हुए जिला प्रशासन, नगर निकाय, पुलिस, सिंचाई और आपदा प्रबंधन विभागों को संवेदनशील क्षेत्रों पर नजर बनाए रखने की आवश्यकता है। विशेष रूप से निचले इलाकों, जलभराव वाले क्षेत्रों, नदी–नालों के आसपास तथा पुराने और जर्जर भवनों के संबंध में सतर्कता बरतना जरूरी होगा।

एक नजर में

सीएसजेएमयू कार्य परिषद में पदोन्नति पर लगी मुहर

कानपुर: छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू) में करियर एडवांसमेंट स्कीम (कैश) के तहत 18 शिक्षकों की पदोन्नति का रास्ता साफ हो गया है। गुरुवार को सेंटर फार एकेडमिक्स में कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक की अध्यक्षता में हुई कार्य परिषद की बैठक में शिक्षकों की पदोन्नति को मंजूरी दी गई। इनमें 15 शिक्षक प्रोफेसर, तीन एसोसिएट प्रोफेसर बनाए गए हैं। जासं

अक्टूबर तक 590 गांव बालश्रम मुक्त होंगे

कानपुर: बाल श्रम उन्मूलन जनपदीय समिति की अपर श्रमायुक्त शमीम अख्तर की अध्यक्षता में नवीन सभागार सरसैया घाट में हुई। प्रथम चरण में अक्टूबर तक 590 ग्राम पंचायतों को बालश्रम मुक्त बनाने और दूसरे चरण में दिसंबर तक 110 नगरीय वार्डों को बालश्रम मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा। मनरेगा उपायुक्त सीएल कनौजिया, प्रशांत द्विवेदी रहे। वि.

...ओं से 25 को रूबरू ...सुनील आंबेकर

...र: छत्रपति शाहू जी महाराज ...द्यालय (सीएसजेएमयू) में 25 ... को 'युवा संवाद' कार्यक्रम ...नी लक्ष्मीबाई सभागार में होने ...र्यक्रम में मुख्य अतिथि ...एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ...न भारतीय प्रचार प्रमुख ...बेकर विद्यार्थियों से सीधे ...गे। नई पीढ़ी की सोच, ..., चुनौतियों और भविष्य ...ओं पर चर्चा होगी। जासं

'बैक्टीरिया ब्लेंड' बढ़ाएगा दलहनी पैदावार, घटेगी उर्वरकों पर निर्भरता

राइजोबियम और पीएसबी का मिश्रण दिलाएगा नाइट्रोजन व फास्फोरस

- आइआइपीआर ने तैयार किया मित्र बैक्टीरिया का मिश्रण
- दलहनी फसलों का उत्पादन 10 से 15 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान

10 राज्यों के 10 हजार एकड़ में किया गया परीक्षण, अरहर, मूंग और उड़द से की गई शुरुआत

जागरण संवाददाता, कानपुर : दलहन की उत्पादकता बढ़ाने और खेती की लागत कम करने की दिशा में भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (आइआइपीआर) के विज्ञानियों ने महत्वपूर्ण पहल की है। विज्ञानियों ने 'मित्र बैक्टीरिया' का विशेष मिश्रण (बैक्टीरिया ब्लेंड) तैयार किया है, जो पौधों की नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने में मदद करेगा। इसके इस्तेमाल से चना, मटर और मसूर जैसी प्रमुख दलहनी फसलों की पैदावार में 10 से 15 प्रतिशत तक वृद्धि होने का अनुमान है। विज्ञानियों के अनुसार बैक्टीरिया का यह मिश्रण पौधों की जड़ों के आसपास सक्रिय होकर पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करेगा। इससे फसलों को मिट्टी में मौजूद पोषक तत्व अधिक प्रभावी ढंग से मिल सकेंगे। इससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने में भी सहायता मिली है।

आइआइपीआर के निदेशक डा.जीपी दीक्षित ने बताया कि 'आइसीएआर-राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो' (एनबीएआइएम) मऊ के सहयोग से इसको तैयार किया गया है। एनबीएआइएम से करीब नौ हजार पैकेट राइजोबियम व फास्फोरस साल्वलाइजिंग बैक्टीरिया (एक प्रकार का मित्र बैक्टीरिया) मंगवाया था। एक मिश्रण तैयार किया है, बोवाई से पहले इससे बीजों का उपचार किया गया। उपचारित बीज खेत में बोने के बाद दोनों मित्र बैक्टीरिया ने सक्रिय होकर पौधों की वृद्धि और पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद की।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान • जागरण आर्काइव

डा. जीपी दीक्षित, निदेशक, आइआइपीआर

ऐसे काम करेंगे दोनों मित्र बैक्टीरिया

डा. दीक्षित ने बताया कि राइजोबियम वायुमंडल में मौजूद नाइट्रोजन को पौधों के लिए उपलब्ध कराने में मदद करता है। यह दलहनी पौधों की जड़ों में गांठें बनाकर नाइट्रोजन स्थिरीकरण की प्रक्रिया में भूमिका निभाता है। वहीं पीएसबी मिट्टी में मौजूद अघुलनशील फास्फोरस को पौधों के लिए उपलब्ध कराता है। संयुक्त उपयोग से पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रभावी ढंग से मिल सकेंगे। इससे फसल का उत्पादन में सुधार की उम्मीद है।

खाद संकट से दिलाएगा राहत, कई प्रदेशों में प्रयोग: निदेशक डा.दीक्षित ने बताया कि राइजोबियम और पीएसबी के मिश्रण का अभी हमारे परीक्षण की प्रक्रिया में है। यह नई बीज किस्म नहीं, बल्कि बीज उपचार के लिए विकसित बैक्टीरिया मिश्रण है। राइजोबियम और पीएसबी के मिश्रण से बीज उपचार करने पर मिट्टी में नाइट्रोजन व फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ेगी। इससे डीएपी की जरूरत कम होगी। खाद संकट को देखते हुए विज्ञानियों ने यह कम लागत वाली तकनीक विकसित की है। विज्ञानियों ने शोध कार्य में अभी शुरुआती चरण में अरहर, मूंग और उड़द से बीज उपचार की प्रक्रिया शुरू की है। कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान आदि 10 राज्यों में 10 हजार एकड़ क्षेत्र में इसका परीक्षण किया गया है। इसकी रिपोर्ट भारत सरकार को भेजी गई है। मंजूरी के बाद व्यावसायिक उपलब्धता और वितरण केंद्र तय होंगे। अभी कीमत निर्धारित नहीं है, लेकिन लागत कम होगी और डीएपी का खर्च घट सकता है।

जैविक विधि से करें टमाटर की खेती, बढ़ जाएगा उत्पादन

जागरण संवाददाता, कानपुर : वर्षा का मौसम किसानों के लिए राहत के साथ कई चुनौतियां भी लेकर आता है, खासकर टमाटर की फसल में इस दौरान ज्यादा नमी, जलभराव और लगातार बादल छाए रहने से रोग और कीटों का खतरा तेजी से बढ़ता है। खेत में पानी जमा होने से टमाटर की जड़ों को नुकसान पहुंच सकता है और पौधों में सड़न जैसी समस्या हो सकती है। ऐसे में अगर किसान समय रहते फसल की सही देखभाल करें तो वर्षा के मौसम में भी टमाटर की अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

डा. मो. सोहेल •सौ.एसए

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के डा.मो. सोहेल के अनुसार टमाटर की जैविक खेती के लिए खेत की गहरी जोताई करें। 50 से 100 किलो गोबर की खाद में तीन-तीन किलो एजोस्पाइरिलम, पीएसबी और ट्राइकोडर्मा मिलाकर नमी बनाए रखते हुए आठ से 10 दिन ढककर रखें। इसके बाद इसे खेत में डालें। नर्सरी तैयार करने से पहले मिट्टी को तैयार करना होगा। प्रति वर्गमीटर नीम की खली एक किलो, गोबर की खाद 10 किलो, माइकोराइजा (वीएएम) 50 ग्राम और पीएसबी 20 ग्राम डालें। क्यारी 75 सेंटीमीटर चौड़ी, 10 से 15 सेंटीमीटर ऊंची रखें। बीज को बोवाई से 12 से 24 घंटे पहले चार

खेत खलिहान

बीज शोधन से सुरक्षा तक हो जैविक उपाय, रासायनिकों पर निर्भरता घटेगी, टपक सिंचाई विधि से बचा सकते हैं पानी

टमाटर की खेती •सौ.एसए

स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस प्रति किलो बीज की दर से शोधित करें। बीज को 1 से 1.5 सेंटीमीटर गहराई पर पांच सेंटीमीटर की दूरी पर बोएं।

मल्चिंग से पानी की बचत: क्यारियों पर धान के पुआल की करीब 7.5 टन प्रति हेक्टेयर दर से मल्चिंग करने से पानी की बचत के साथ उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

कीटों का यूं करें समाधान: फल छेदक और दूसरी बीमारियों से बचाने को प्रति हेक्टेयर 12 फेरोमोन ट्रैप और पांच ट्राइकोकार्ड लगाएं। सफेद मक्खी, माहू और माइट के लिए पीले चिपचिपे ट्रैप का प्रयोग करें। नीम तेल या एजाडिरेक्टिन का छिड़काव किया जा सकता है। खेत में लेडीबर्ड बीटल व लेसविंग जैसे मित्र कीटों को संरक्षण दें। पौधे सूखने की समस्याओं पर ट्राइकोडर्मा हरजेनियम या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस से बीज,